# सर्व गुणों में अच्छा गुण है - धीरज और नम्रता

## दादी जानकी

सारा दिन बाबा को याद करो और देह-अभिमान को छोड़ने के लिए पुरुषार्थ करो। हम शुद्र से ब्राह्मण तो बन गये लेकिन देवता बनने के लिए अपने में दैवीगुण धारण करने हैं। एक कर्मातीत स्थिति को पाना है और दूसरा दैवीगुण धारण करने हैं। कर्मातीत स्थिति पाना माना पावन बन करके बाबा के घर जाना। बाबा है पतित-पावन। भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ दान पुण्य इन्डायरेक्ट करते है, उसका फल राजाई मिलती है। सतयुगी राजाई सिर्फ दान करने से नहीं मिलेंगी। धन और तन को पावन बनाने लिए यहाँ सफल करना है परन्तु आत्मा को पहले पावन बनाना है। ब्राह्मण माना पवित्रता। फिर देवता बनने लिए दैवी गुण धारण करना है। दैवी गुण धारण करने से, अटेन्शन रखने से वाणी मधुर होगी, भाव स्वभाव से परे रहेंगे। अपना भाव जो अन्दर से शुभ हो वो वाणी में आयेगा। अपने वा दूसरों के स्वभाव के वश नहीं होंगे। ऊंच पद पाने वाले बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहेंगे। जो पुरुषार्थ में थकते हैं, उन्हों को हँसना भी मुश्किल लगता है। बाबा ने सिखाया है कि कोई नमस्ते करते हैं तो हमको भी उसको नमस्ते करना चाहिए। जैसा समय वैसा वेष। साइलेन्स में जाना अच्छा है। वाणी में आना है तो मुस्कराते मुँह से आना है और साइलेन्स में अन्तर्मुखी होकर रहना है। कर्म करते योग में अटेन्शन रखने से हम कर्मयोगी दिखाई देंगे। अगर हम सिर्फ साइलेन्स और योग में रहेंगे तो कर्म नहीं होगा। कर्म में इतना जरुरी नहीं है जो वाणी में आयें। जब वाणी में आना है तो सोच समझ से बोलना है, बोल अर्थ सहित हो, किसी के काम के शब्द हों वह हम बोलें, उस समय सोचें नहीं कि क्या बोलें। सदा सोच समझ कर राइट बोल हो, जैसा समय वैसा बोल हो। कर्मयोगी बनने लिए, वाणी में भी आने के लिए बडा अक्ल चाहिए। वाणी हमारी ऐसी न हो कि जो चाहिए सो बोलें लेकिन ऐसा दिमाग हो जो दो मिनट में गुड विशश दे सकें।

यह नाटक है जिसमें हम पार्टधारी है, कोई भी पार्ट बजाना है तो सेकेण्ड वा मिनट में ऐसी तैयारी हो जैसा सीन सामने वैसा रूप शान्ति और प्रेम का हो जाए। ज्ञान मुख में तो है लेकिन जो गुण मूर्त है वह सबको प्यारा लगता है। गुणों में भी सबसे अच्छा गुण है - 'धीरज और नम्रता'। यह दो गुण ज्ञानी के कर्म और सम्बन्ध में हो। देह-अभिमान धीरज और नम्रता को धारण नहीं करने देता है। देह-अभिमान सुख-दुःख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, हार-जीत में जल्दी नीचे ले आता है। अभी ऊपर चढ़ने की कोशिश करेंगे, समझेंगे आज तो स्थिति बहुत अच्छी है और कोई कारण बना, अपमान हुआ तो सारी स्थिति नीचे आ गई। बाहर कुछ नहीं बोलेंगे लेकिन अन्दर जो फीलिंग घुस गई है वो निकालना मुश्किल है। कान को क्या कहेंगे, कैसे बन्द करेंगे? दोनों कान खुले हैं लेकिन अच्छी तरह से बाबा का ज्ञान नहीं सुनेंगे तो धारण कैसे होगा! कानों को अच्छी तरह से ट्रेनिंग देनी चाहिए। बाबा की बातें सुनने से धारणा अच्छी हो जाती है, जो दूसरे कान से निकालते नहीं हैं। जो बात काम की नहीं है वो दूसरे कान से निकालनी हैं, अन्दर जाने नहीं देनी है। आर्ट हो कि बाबा की बातें अन्दर चली जायें। कान से सुनी, बुद्धि ने समझी और दिल ने ले ली तो और कोई बातें कभी भी दिल में जायेंगी नहीं क्योंकि बाबा की बातें बहुत पावरफुल हैं।

बाबा ने कहा है कि यह ज्ञान तुम बच्चों को ही बाप देता है जिससे तुम ऊंच पद पाते हो जो फिर प्रायः लोप हो जाता है। यह ज्ञान हमारे लिए है और किसको सुनाओ तो समझेंगे नहीं। संगमयुग पर हम शुद्ध संस्कार भरते हैं। बाबा ने जो संस्कार डाले हैं वो हमको खींच रहे हैं। बाबा स्मृति दिलाते हैं कि तुम वही हो। जिसको हम सो का अटेन्शन है कि हम तो वही हैं तो देह-अभिमान खत्म हो जाता है। हम कल्प पहले वाले वही बाबा के मददगार बच्चे देवी-देवता धर्म स्थापन करने वाले हैं। जब पता चला कि हम देवता धर्म वाली आत्मा हैं तो वह खाना-पीना सब छूट गया, अभी हम उसे टच भी नहीं कर सकते हैं।

सेवाधारी माना सच्चा और सो भी यज्ञ का सेवाधारी। भगवान ने जो यज्ञ रचा है उसमें आनेस्टी से सेवा करने से बल मिलता है और भविष्य का फल भी प्राप्त होता है। सेवा करने में शक्ति और बल चाहिए। सेवा में बल मिलता और औरों को फल खाने को मिलता है, उनकी दुआयें हमको मिलती हैं। अगर उसको छोड कर बैठ जायें तो न मेरा भविष्य, न औरों का भविष्य बनेगा। मुख्य बात है देह-अभिमान को छोड़ना, कर्मातीत स्थिति को पाना और हम सो का मन्त्र पक्का करना। मैं ब्राह्मण हूँ वा देवता हूँ? सतयुगी देवता हूँ इसलिये युद्ध करना नहीं जानते। मन, वाणी, वृत्ति, दिल और भावना किसी भी प्रकार से युद्ध करना नहीं जानते हैं। बडा ऊंच पद पाने वाला कहेगा सब अच्छा है। अच्छा नहीं है, कहो ही नहीं क्योंकि आज नहीं तो कल अच्छा हो जायेगा। हम भी अच्छा बन जायेंगे, सब अच्छा बनेगा और सारी दुनिया नई बन जायेगी। ब्राह्मण कभी किसी बात की चिन्ता नहीं करते हैं। जो लड़ने वाला है वह क्षत्रिय। चिन्ता करने वाला है वैश्य, जो खराब खाने पीने वाला है, जिसकी बुद्धि इधर उधर जाये, टच करे वो कौन हुआ? नाम नहीं लेंगे। जरा भी दृष्टि, वृत्ति और बोल खराब है तो उसके साथ हमारा टाइम, संग वा पैसा जा नहीं सकता है।